अनुवाद

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, हे अर्जुन! पांडित्यपूर्ण वचन बोलता हुआ भी तू उनके लिए शोक कर रहा है जो शोक के योग्य नहीं है। पर पण्डितजन तो जिन के प्राण चले गये हैं और जिनके प्राण नहीं गये हैं, उनके लिये भी शोक नहीं करते।।११।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् ने तत्काल गुरुपद ग्रहण कर लिया और शिष्य को परोक्ष रूप से मूर्ख कहकर उसका शासन किया। उन्होंने कहा कि हे अर्जुन! तू बोल तो पण्डितों के समान रहा है, परन्तु इतना भी नहीं जानता कि देहतत्त्व तथा आत्मतत्त्व के मर्म को जानने वाले पंडितजन देह की जीवित अथवा मृत, किसी भी अवस्था के लिए शोक नहीं करते। जैसा अगले अध्यायों में वर्णन किया गया है, ज्ञान का अर्थ देह, आत्मा और उन दोनों के ईश्वर के तत्त्व को जानना है। अर्जुन का तर्क है कि राजनीति अथवा समाजनीति की अपेक्षा धर्म का अधिक माहात्म्य है। परन्तु वह यह नहीं जानता कि आत्मा, देह तथा उनके ईश्वर का ज्ञान सामान्य धर्म से भी अधिक महत्व रखता है। उस ज्ञान को न जानने के कारण उसके लिए अपने को महापण्डित के रूप में प्रदर्शित करना उचित नहीं। अल्पज्ञतावश शोक के अयोग्य वस्तु के लिए भी वह अतिशय शोकाकुल हो रहा है। देह का जन्म हुआ है, अतः इसका विनाश भी अवश्यम्भावी है। इसी कारण देह का महत्त्व आत्मा की महिमा के तुल्य नहीं है। जो इस तथ्य को जानता है, वही यथार्थ में पण्डित है, क्योंकि देह की किसी भी अवस्था में उसके लिये शोक का कोई कारण नहीं हो सकता।

29.1

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम्।।१२।।

न=नहीं; **तु**=तो; **एव**=ही; **अहम्**=मैं; **जातु**=किसी काल में; **न**=नहीं; **आसम्**=था; **न**=नहीं (था); **त्वम्**=तू; **न**=नहीं (थे); **इमे**=ये सभी; **जनाधिपाः**=राजा; **न**=नहीं; **च**=तथा; **एव**=ही; **न**=नहीं; **भविष्यामः**=रहेंगे; **सर्वे**=सब; **वयम्**=हम; **अतः परम्**=इससे आगे।

अनुवाद

न तो ऐसा ही है कि किसी काल में मैं नहीं था, तू नहीं था अथवा ये सब राजा नहीं थे और न ही ऐसा है कि इससे आगे हम सब नहीं रहेंगे।।१२।।

तात्पर्य

वेद, कठ एवं श्वेताश्वतर उपनिषदों में कथन है कि भगवान् श्रीकृष्ण जीव को उसके कर्म तथा कर्मफल के अनुरूप विभिन्न योनियाँ प्रदान करते हुए असंख्य जीवों का परिपालन कर रहे हैं। वे अंश-रूप से जीवमात्र के हृदय में स्थित हैं। उन परमेश्वर श्रीकृष्ण का बाहर-भीतर सर्वत्र दर्शन करने वाले सन्तजन ही यथार्थ